नई तालीम

उपेक्षित विरासत और संभावना का बीज

ऋषभ कुमार मिश्रा

एक बार वर्धा में शिक्षकों से बात करते हुए गांधी जी ने कहा था कि 'हर हिटलर तलवार के बल पर अपना उद्देश्य पूरा कर रहा है। मैं आत्मा द्वारा करना चाहता हूं। पाश्चात्य जगत विनाशक शिक्षा दे रहा है, हमें अहिंसा के जरिए रचनात्मक शिक्षा देनी है।[1] 'गांधी जी की इसी रचनात्मक शिक्षा का ठोस और मूर्त रूप नई तालीम है जिसके संदर्भ और स्वरूप को उन्होंने वर्धा शिक्षा परिषद (1937) में दिए गए भाषण में प्रस्तुत किया था। इस भाषण में उन्होंने देश की परिस्थिति, शिक्षा की समस्याओं और समाज की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए दस्तकारी को शिक्षा के केन्द्र में रखने का प्रस्ताव दिया। वे शिक्षा द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास (शरीर, बुद्धि और हृदय) के हिमायती थी। उन्होंने केवल एक पद्धति का प्रतिपादन नहीं किया बल्कि शिक्षा के द्वारा अपने समाज-दर्शन को भी आम लोगों के सामने रखा। इसी सम्मेलन में गांधी जी की इस योजना को स्वीकार करते हुए परिषद ने चार प्रस्तावों को सर्व सम्मति से स्वीकृत किया[2] -

1. देश के सभी बच्चों के लिए सात वर्ष की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध होना चाहिए।
2. शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से दी जानी चाहिए।
3. समस्त शिक्षा किसी उत्पादक उद्योग को केन्द्र में रखकर दी जाए। उद्योग का चुनाव परिस्थिति और वातावरण के अनुकूल हो।
4. दस्तकारी के उत्पादों से इतनी आमदनी धीरे-धीरे होने लगे कि उससे शिक्षकों का पारिश्रमिक चुकाया जा सके।

तब से लेकर आज तक नई तालीम हमारे लिए चर्चा का विषय है। आजाद भारत की लगभग हर शैक्षिक योजना, नीति और दस्तावेज में इसका संदर्भ देखा जा सकता है। इसकी सफलता और असफलता के किस्से, आधुनिक विकास के मॉडल से बेमेलपन और ग्रामीण भारत के उद्धार के शैक्षिक मॉडल जैसी व्याख्याओं से साहित्य भरा पड़ा है। शिक्षा का हर अध्येता भारतीय संदर्भ में शिक्षा के लिए इसका कोई न कोई निहितार्थ जरूर खोज लेता है। इस लेख में नई तालीम की इसी विरासत की व्याख्या इन सवालों के सापेक्ष की गई है - बच्चों को शिक्षा क्यों दी जाए? शिक्षा की अंतर्वस्तु (कंटेंट) क्या हो? शिक्षा कैसे दी जाए? इन व्याख्याओं द्वारा भविष्य की शिक्षा के लिए संभावना के बीज को खोजने की भी कोशिश की गई है।

नई तालीम की बुनियाद

नई तालीम के बारे में आम समझ इसे पढ़ने-पढ़ाने की एक ऐसी विधि की तरह देखती है जिसमें हस्तशिल्प और उद्योग का इस्तेमाल किया जाता है। जबकि नई तालीम एक नए समाज की परिकल्पना को साकार करने का औजार है। यह नया समाज अहिंसक, स्वावलंबी, शांतिमूलक, न्याय आधारित, धर्म निरपेक्ष और लोकतांत्रिक भागीदारी वाला होगा, ऐसी गांधीजी की इच्छा थी। इस समाज में 'आत्मोन्नति सत्य के

आधार पर, समाजोन्नति अहिंसा, सहयोग, स्वावलंबन और विकेन्द्रीकरण के आधार पर एवं आर्थिक समृद्धि अपरिग्रह, श्रमनिष्ठा एवं शोषणहीनता के आधार पर संभव है'[3]। इस नए समाज के लिए बालक-बालिकाओं की तैयारी शिक्षा का ध्येय है। काका कालेलकर तो इस संदर्भ में यहां तक मानते थे कि जो समाज और राज्य उक्त विशेषताओं को धारण नहीं करता वह न तो नई तालीम के महत्व को समझ पाएगा और न ही अपना पाएगा। स्पष्ट है कि नई तालीम का समाज-दर्शन व्यक्ति और समाज की पारस्परिकता को मजबूत करता है। यह केवल वैयक्तिक गुणों के विकास को समाज के लिए हितकर नहीं मानती है बल्कि समुदाय के साथ सहजीवन के उद्देश्य को तरजीह देती है। इसमें व्यक्तिगत भलाई और सामाजिक भलाई दो अलग लक्ष्य या रास्ते न होकर एक दूसरे के पूरक हैं। यह मान्यता वैयक्तिक विकास की व्यक्ति केन्द्रित दृष्टि को खारिज करती है और वैयक्तिक दायरे का विस्तार कर उसमें सामाजिक बोध को भी जोड़ती है।

नई तालीम में व्यक्ति और समाज के रिश्ते को मजबूत करने के लिए आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन को महत्वपूर्ण कसौटी माना गया है। इसका संबंध व्यक्ति और समुदाय दोनों से है। गांधी जी गांव को समुदाय की प्रतिनिधि इकाई मानते थे। उनका मानना था कि अंग्रेजी राज के पहले गांव की आर्थिक व्यवस्था आत्मनिर्भर थी जिसका आधार हस्तशिल्प था। वे चाहते थे कि आत्मनिर्भरता का उक्त आधार केवल और केवल हाथ के काम तक सीमित न रहे। इसी कारण नई तालीम में वे हाथ के काम से दिमाग को शिक्षा देने का रास्ता सुझाते हैं। उन्हें इस रास्ते की जरूरत क्यों पड़ी? उनका अवलोकन था कि औपनिवेशिक शिक्षा की किताबी तालीम गांव देहात के बच्चों को मुहर्रिरी (छोटी-मोटी नौकरी) के लिए तैयार करती है। वे गांव छोड़कर शहर में बसते हैं। इनमें से ज्यादातर अपने पेशों को भूल गए हैं। उनमें असंतोष भी व्याप्त है।[4] यानि कि इस शिक्षा द्वारा आत्मनिर्भरता का लक्ष्य तो भंग हुआ साथ ही एक ऐसी नई व्यवस्था की ओर कदम बढ़े जो विकास के लिए एक नई भौगोलिक-आर्थिक इकाई-शहरों और औद्योगिक केन्द्रों को गांवों के बरक्स खड़ा कर रही थी। गांधी जी की चिंता यह थी कि यह इकाई पूंजी केन्द्रित आर्थिक व्यवस्था और इसी के अनुरूप सामाजिक व्यवस्था की प्रेरक है। इसका आशय यह नहीं है कि गांधी जी शहरों के विरोधी हैं बल्कि तत्कालीन परिस्थितियों के कारण गांवों की राजनीतिक स्वायत्तता के लिए वे आर्थिक आत्मनिर्भरता को अपरिहार्य मानते थे।[5] इसी कारण गांवों को आत्मनिर्भर इकाई बनाने के उद्देश्य से वे उत्पादक श्रम और सामुदायिक जीवन की तैयारी को शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। कृष्ण कुमार का मत है कि भारतीय सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में दस्तकारी को शिक्षा में स्थान देना एक क्रान्तिकारी फैसला था। इसने ज्ञान के समाजशास्त्र की दृष्टि से पिछड़ी और उपेक्षित जातियों के ज्ञान और कौशल को सीखने-सिखाने की स्वीकृत अन्तर्वस्तु बना दिया। इसी तरह आत्मनिर्भरता के संदर्भ में गांधी को विज्ञान-प्रौद्योगिकी विरोधी या समर्थक घोषित करना भी अधूरी व्याख्या है। वे खुद दस्तकारी के वैज्ञानिक आयाम को शिक्षा का कंटेंट मानते थे। हां यह जरूर है कि उनके लिए राजनीतिक स्वायत्तता पहली शर्त है जिसके पूर्ण होने पर उत्पादन के लिए मशीनों के प्रयोग से शोषण व अन्याय की संभावना न्यूनतम होगी।[6] इसी राजनीतिक स्वायत्तता को ग्राम समाज में पुष्ट करने के लिए वे आत्म-निर्भरता के लक्ष्य को हस्तशिल्प और सहकार आधारित व्यवस्था द्वारा प्राप्त करना चाहते थे। इसका एक लाभ यह भी था कि जनशिक्षा के प्रसार में तत्कालीन राज्य के सहयोग और हस्तक्षेप की संभावना भी न्यूनतम की जा सकती थी।[7] आत्मनिर्भरता के इन्हीं लक्ष्यों को वे नई तालीम के क्रियान्वयन में भी देखते थे। निहितार्थ है कि नई तालीम में आत्मनिर्भरता व स्वावलंबन स्वतंत्रता का प्रतीक है। वैसे तो शिक्षा की हर व्यवस्था आदर्श रूप में स्वतंत्र विवेक के विकास को अपना लक्ष्य मानती है। इस दिशा में गांधी की स्थापना थी कि स्वतंत्र विवेक अर्थात बौद्धिक स्वालंबन, भौतिक स्वालंबन के बिना नहीं प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही स्वालंबन के साध्य के लिए साधन की पवित्रता भी जरूरी है। इसी कारण वे किसी भी ऐसे निवेश से शिक्षा व्यवस्था के संचालन का विरोध करते हैं जिसमें हिंसा और अपवित्रता हो। इंग्लैण्ड और अमेरिका में शिक्षा पर होने वाले बड़े खर्च का संदर्भ लेते हुए उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा था कि इन देशों में शिक्षा पर होने वाला बड़ा खर्च, लूट का धन है। ऐसे धन से जो दूसरों के शोषण से अर्जित है उसके द्वारा शिक्षा का संचालन उचित नहीं है। यह अहिंसा के सिद्धान्त के भी विरुद्ध है।[8] स्पष्ट है कि वे शिक्षा की संरचना और व्यवस्था में इसकी पवित्रता को कायम रखने के हिमायती थे। यह पवित्रता मानव चेतना के निर्माण में साधन-साध्य में किसी भी तरह के विरोधाभास

को अस्वीकार करती है। गांधी जी द्वारा शराब या इस जैसी अन्य वस्तुओं के टैक्स से अर्जित धन के शिक्षा में निवेश का विरोध इसका उदाहरण है। इस तरह के धन के बदले वे विद्यालय की आत्म निर्भरता के लिए बच्चों के उत्पादक श्रम से अर्जित धन को तरजीह देते हैं। नई तालीम की परिकल्पना में उन्होंने इसकी उदाहरण सहित व्याख्या की थी। इसी आधार पर आलोचक नई तालीम को कटघरे में खड़ा करते हैं। वे इसे बाल-श्रम से जोड़कर देखते हैं। ऐसे ही विद्यालय की आत्मनिर्भरता को विद्यालय जाने वाले बच्चे द्वारा आजीविका कमाई के रूप में देखा जाता है। जबकि यह व्याख्या अधूरी है बाद के वर्षों में हिंदुस्तानी तालीम संघ ने विद्यार्थियों के उत्पादक कार्यों से विद्यालय की आत्मनिर्भरता की अपरिहार्यता के स्थान पर इसे आत्मनिर्भरता का एक घटक माना था। यहां ध्यान देने योग्य है कि नई तालीम के संदर्भ में उत्पादक उद्योग केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक नहीं है बल्कि यह शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के समग्र और सर्वांगीण विकास के लिए अपरिहार्य है। यह तथ्य विनोबा के विचारों से भी पुष्ट होता है। इन्होंने स्वालंबन के तीन अर्थ बताये हैं- अपने भरण-पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर न रहना, ज्ञान प्राप्ति की स्वतंत्र शक्ति होना और आत्मानुशासन से इन्द्रियों एवं मन को वश में रखना।[9] इस तरह से नई तालीम में हस्तशिल्प से आत्मनिर्भरता का रास्ता नैतिक विकास तक जाता है। इस स्थापना का प्रमाण गांधी के इस कथन में देख सकते हैं- ''तालीम का यह तरीका हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई सभी के लिए एक सा होगा। मुझसे पूछा जाता है कि मैं धार्मिक शिक्षा पर कोई जोर क्यों नहीं देता? वजह यह है कि मैं उन्हें स्वालंबन का धर्म तो सिखा रहा हूं जो मेरे ख्याल में सब धर्मों का अमली रूप है।''[10] स्पष्ट है कि दस्तकारी की शिक्षा बच्चे की बुद्धि की खुराक तो है ही, साथ ही, यह उसमें श्रम के सामर्थ्य से नैतिक ताकत पैदा करती है। उसमें आत्मबल पैदा होता है। यदि वह खुद को पोषित कर सकता है तो स्वाभाविक है कि वह दूसरे का शोषण नहीं करेगा। उत्पादक कार्य से उसमें सेवा और सहकार के बीज भी पड़ते हैं जो आगे चलकर सुविकसित, जागृत और स्वतंत्र नागरिक को तैयार करते हैं।

महात्मा गांधी ने नई तालीम से जुड़े अपने पहले वक्तव्य में ही स्पष्ट किया था कि इसके अंतर्गत हाथ के काम यानी कि दस्तकारी को केवल सामान बनाने के प्रशिक्षण तक सीमित नहीं किया जाएगा बल्कि उसमें निहित वैज्ञानिक ज्ञान से भी परिचित कराया जाएगा और सीखने-सिखाने के वैज्ञानिक तरीके को अपनाया जाएगा। इस तरह से क्या पढ़ाया जाए? और कैसे पढ़ाया जाए? दोनों सवालों के जवाब में प्रधानता वैज्ञानिक विश्वदृष्टि की है। इसे अपनाने का पहला अर्थ है कि भौतिक जगत के पदार्थों के आपसी संबंध, नियम, जोड़-तोड़ से परिचित कराया जाए। दूसरा अर्थ है कि शारीरिक स्वास्थ्य, बौद्धिक उद्दीपन, आपस में मिलजुल कर काम करने और परस्पर सम्मान करने के भाव को पोषित किया जाए। दस्तकारी सीखने में वैज्ञानिकता के इन्हीं पक्षों को आर्यनायकम् दम्पति ने इस प्रकार समझाया है- *'हर एक बात की क्यों और कैसे के बारे में जिज्ञासा, प्रत्येक वस्तु, विचार, घटना और परंपरा को सत्य की कसौटी पर जांचने के लिए जरूरी धीरज और निष्पक्षता, हर एक बात पर अपने आप सोचने की शक्ति और साहस, सच्ची घटना को मानने की और प्रयोगशाला में या बाहर उसमें फेरबदल न करने की ईमानदारी, ये सब इस (नई तालीम में निहित) वैज्ञानिक मनोवृत्ति के लक्षण हैं।*[11] 'स्पष्ट है कि नई तालीम विद्यार्थियों में जिस वैज्ञानिक मनोवृत्ति को पोषित करने का लक्ष्य रखती है उसका संबंध केवल ज्ञानार्जन से नहीं है बल्कि सत्य के प्रति श्रद्धा, जीवन की सादगी, दूसरे धर्म-विश्वास और विचारों के बारे में सहिष्णुता व परस्पर आदर और रूढ़ियों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि से है। यह उद्योग के विज्ञान से वृत्ति (प्रोफेशन) और चरित्र के विकास को साकार करने का स्वप्न है।

शिक्षा की अन्तर्वस्तु और पद्धति

नई तालीम की दो आधारभूत मान्यताएं हैं। पहला, शिक्षा द्वारा शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास। इसके अनुरूप नई तालीम में सफाई, आरोग्य, सामाजिक तालीम, काम, प्रार्थना, खेल-कूद, मनोरंजन और सामुदायिक गतिविधियों को शामिल किया जाता है। दूसरा, शिक्षा और साक्षरता में फर्क। साक्षरता के लिए लिखना, पढ़ना, गिनना आदि दक्षताओं पर बल देते हैं। यह शिक्षा के अंग हैं लेकिन शिक्षा नहीं। शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य व्यक्ति बोध के साथ सामाजिक दायित्व बोध का विकास है। इसके लिए किसी उद्योग या दस्तकारी को शिक्षा की अन्तर्वस्तु बनाते हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि उद्योग या दस्तकारी का काम बच्चों के विचार से उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए न कि

बड़ों के। इसका संगठन करते हुए कक्षा की जरूरत और परिस्थिति के अनुसार छोटी-छोटी इकाइयों में बांटा जाता है। शिक्षण कालांश में न होकर काम की इकाइयों के मुताबिक किया जाता है। नई तालीम में उद्योग, समाज और प्रकृति के समवाय से सीखने-सिखाने के अनुभव प्रदान किए जाते हैं। इसमें किताबी ज्ञान जैसी सूचनाओं की प्रधानता नहीं होती बल्कि काम और मनोरंजन, श्रम और विश्राम, व्यावहारिक कौशल और सृजनात्मक कौशल का तालमेल होता है। नई तालीम में सीखने के अनुभवों के आयामों और गतिविधियों की रूपरेखा को तालिका-1 में प्रस्तुत किया है।

तालिका-1 : नई तालीम की गतिविधियों की रूपरेखा[12]

स्वस्थ जीवन का अभ्यास	व्यक्तिगत और सामाजिक सफाई, प्राथमिक चिकित्सा, सफाई एवं स्वास्थ्य से संबंधित सामुदायिक गतिविधियों का आयोजन
स्वावलंबन का अभ्यास	अन्न स्वावलंबन (खेती–बागवानी, अन्न संग्रह, ,खाना बनाने की प्रक्रियाएं), वस्त्र स्वालंबन (कपास पैदा करने से कपड़े का तैयार होना, कपड़ों की मरम्मत आदि), आश्रय स्वावलंबन
दस्तकारी का अभ्यास	खेती–बागवानी, कताई–बुनाई, लकड़ी और धातु का काम
नागरिकता का अभ्यास	घर, स्कूल, गांव, देश और समग्र मानवजाति में पड़ोसी–धर्म, मिल–जुलकर काम करने के लिए जरूरी आदतों और मनोवृत्ति का विकास
रचनात्मकता का अभ्यास	खेल–कूद, नृत्य, संगीत, नाट्य–प्रयोग, सामाजिक–सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन, साहित्य रचना आदि।

तालिका-1 में जिन आयामों और गतिविधियों का उल्लेख किया है उनके द्वारा गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मातृभाषा को सीखाया जाता है। तालिका-2 में इनके समवाय और एकीकरण का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका-2: नई तालीम में गतिविधियों और विषयों का तालमेल[13]

गणित	उद्योग संबंधी	जोड़–घटाव गुणा–भाग की समझ, देशी और अंतरराष्ट्रीय इकाइयों में नाप–तौल, लेखा बनाना आदि, रेखा गणित, ज्यामितीय आकृतियों की समझ, कोण का ज्ञान और निर्माण ऐकिक नियम, अनुपात–समानुपात, बही–खाता के सरल और मिश्रित सवाल आदि।
	समाज संबंधी	स्कूली खर्चे का हिसाब, क्षेत्र भ्रमण, उत्सवों के आयोजनों का लेखा–जोखा, घरेलू कार्यों में मापन व गणित की गणनाएं।
	प्रकृति संबंधी	खेत या रकबे का आकार समझकर बीज बोना, पौधों के विकास का आंकड़ा, फसल की कीमत, खरीद–बिक्री का हिसाब रखना, नफे–नुकसान की गणना, प्रतिशत के सवाल, क्षेत्रफल, अनुपात,
विज्ञान	उद्योग संबंधी	प्राकृतिक और कृत्रिम रंग, पदार्थ के भौतिक और रासायनिक परिवर्तन, पुली और लीवर का सिद्धान्त, यांत्रिकी, पदार्थ की अवस्थाएं और उनमें परिवर्तन, घर्षण के सिद्धान्त आदि।
	समाज संबंधी	अपने शरीर के विभिन्न अंगों को साफ करना, गंदे और साफ जल की पहचान, जल साफ रखने के देहाती तरीकों को पहचानना, संक्रामक बीमारियों चेचक, मलेरिया और हैजे आदि का ज्ञान, खाद्यो के भेद और उनकी पौष्टिकता, प्राथमिक चिकित्सा आदि
	प्रकृति संबंधी	मौसम और ऋतुओं का ज्ञान, प्राकृतिक परिघटनाओं– इन्द्रधनुष, बिजली, ओला, पाला लू, कुहासा आदि पर चर्चा, पृथ्वी की गतियां, चन्द्रमा की कलाएं, सूर्य ग्रहण, चन्द्र ग्रहण आसपास की वनस्पतियों और जैव विविधता का ज्ञान

समाज विज्ञान	उद्योग संबंधी	उद्योग की विभिन्न क्रियाओं में ईमानदारी, दायित्व, सहयोग और भागीदारी, उद्योग और खेती के इतिहास के मानवजाति और सभ्यता का इतिहास, फसलों की खेती के लिए जलवायु, मृदा और अन्य भौगोलिक कारकों का ज्ञान, व्यापार के मार्ग, उनका इतिहास और अर्थव्यवस्था आदि।
	समाज संबंधी	सामुदायिक त्योहारों के जरिए संस्कृति की जानकारी, ऐतिहासिक स्थानों का परिभ्रमण, ग्राम कल्याण के कार्यक्रमों का प्रचार, नागरिक हकों को समझना और समझाना आदि
	प्रकृति संबंधी	मानव–पर्यावरण के तालमेल का अध्ययन, कागज और कपास के द्वारा इतिहास और भूगोल का ज्ञान, खेती के औजारों और अन्य संसाधनों के प्रयोग से संसाधन और समाज का संबंध
भाषा	उद्योग संबंधी	उद्योग संबंधी शब्दों की विस्तृत सूची बनाना, इनसे संबंधित कथा, कहानी और गीतों का संकलन, लेखों को लिखना और प्रसारित करना, किताबों का अध्ययन करना आदि।
	समाज संबंधी	सामाजिक उत्सवों और आयोजनों के भाषण तैयार करना, इश्तहार निकालना, सामाजिक मृददों से संबंधित पुस्तकों को पुस्ताकालय में खोजना और पढ़ना, पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन करना, शब्दकोश का प्रयोग करना आदि
	प्रकृति संबंधी	प्राकृतिक घटनाओं के अवलोकन का लेखन और वाचन, कविता व गीत रचना, प्रकृति से संबंधित वैज्ञानिक आविष्कारों का अध्ययन

समवाय पद्धति

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि नई तालीम की पद्धति के केन्द्र में दस्तकारी है। इसका पहला सरल अर्थ है कि बच्चों को दस्तकारी सिखाई जाए। इसी अर्थ में नई तालीम को रूढ़ कर दिया गया। हम देख सकते हैं लगभग हर स्कूल में हाथ का काम सिखाने की व्यवस्था होती है। इसमें विद्यार्थी काम सीख जाता है। उसमें निष्पादन कुशलता भी आ जाती है लेकिन वह किसी प्रक्रिया या परिघटना में निहित वैज्ञानिक सिद्धान्त और उसके सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश से संबंध को नहीं समझ पाता है। थोड़े ही दिनों में ऐसे अभ्यास उसे उबाऊ लगने लगते हैं। एक दूसरा तरीका है दस्तकारी का किताबी और बौद्धिक ज्ञान देना। गांधी ने नई तालीम के शिक्षकों से संवाद में इस तरीके के खतरों से आगाह करते हुए संकेत किया था कि इससे ऐसे दस्तकार तैयार होंगे जो कुदरत के साथ तो रहेंगे फिर भी कुदरती जीवन के कानून को नहीं जानेंगे। तीसरा तरीका है कि गणित, विज्ञान और भाषा के साथ दस्तकारी को जोड़ देना। यह विधि भी खतरनाक है। इसमें ज्ञान, कर्म को निर्देशित करता है। बौद्धिक ज्ञान की सत्ता ही कायम रहती है और हाथ का काम दोयम दर्जे का होता है। ऐसी स्थिति इंजीनियर और मैकेनिक के अंतर जैसी है। दस्तकारी को शिक्षा के केन्द्र में रखने का मुख्य उद्देश्य ज्ञान और कर्म का भेद मिटाना है। साधन और साध्य की शुद्धता को कायम रखना है। ऐसी पद्धति को ही विनोबा ने समवाय पद्धति कहा है।[14] पूर्व की विधियों में सुविधा थी कि पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु के बारे में शिक्षक को अधिक चिंतन-मनन करने की जरूरत नहीं है। पाठ्यपुस्तक में उसे विस्तार से दिया गया है बस इस विस्तृत विषय ज्ञान को पढ़ाना है और जहां तक संभव हो हाथ के काम को शामिल कर लेना है लेकिन जब आप समवाय के सिद्धान्त का प्रयोग करेंगे तो दस्तकारी के साथ विषय को जोड़ने की समस्या पैदा होगी। किस दस्तकारी का चुनाव करें? इस मामले में नई तालीम स्पष्ट रूप से कहती है कि जो सुविधानुसार स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हो। ऐसा करने से एक तो विद्यालय के बाहर और भीतर का भेद मिटता है साथ ही समाज का बड़ा फलक खुलता है जिसके माध्यम से शिक्षा दी जा सकती है। इसका उदाहरण तालिका-2 में देखा जा सकता है। आवश्यक नहीं है कि जिस दस्तकारी को चुना है उसी के इर्द-गिर्द सारा विषय ज्ञान दें। कई बार ऐसा संभव नहीं होता है और ऐसा करने का हठ कक्षा को कृत्रिम बना देता है। ऐसी ही एक स्थिति का उल्लेख विनोबा ने अपने संस्मरण में किया है वे बताते हैं कि शिक्षक गणित की किसी अवधारणा को पढ़ाते वक्त तकली के प्रयोग को लेकर इतना आग्रही थी कि पाठ के अंत में उसने तकली गीत करवाया। ऐसा करके उसने गणित की अवधारणा को गौण कर दिया और गीत

के भाव के बदले उसका गान एक नित्य कर्म बनकर रह गया। यह नित्य कर्म स्मरण के आधार पर गीत को दोहराने तक ही सीमित था। विनोबा तो शिल्प और उद्योग के चुनाव में स्थानीय संदर्भों के प्रति इतने सजग थे कि उनका मानना था कि पवनार और वर्धा के नई तालीम आधारित विद्यालयों की पद्धतियां भी एक सी नहीं हो सकती हैं क्योंकि पवनार में नदी बहती है जबकि वर्धा में ऐसा नहीं है। समवाय पद्धति के संदर्भ में गांधी जी का सुझाव था कि शिक्षकों को कोई न कोई उद्योग अवश्य सीखना चाहिए। इसके माध्यम से उन्हें अपने विषय ज्ञान का अनुसंधान करना चाहिए। इसके दो निहितार्थ हैं। पहला, वे अपने विषय ज्ञान के प्रायोगिक पक्ष को समझ पाएंगें जिससे शिक्षकों में बौद्धिक विकास के साथ आत्मनिर्भरता बढ़ेगी, दूसरा, वे अपने विद्यार्थियों को दस्तकारी के माध्यम से विज्ञान, गणित और भाषा आदि की शिक्षा देने के तरीके खोज सकेंगे। नई तालीम की पद्धति की गत्यात्मकमा और जीवंतता को शांता नारूलकर के एक उदाहरण से समझ सकते हैं।[15] आपने नई तालीम के शुरुआती 6 वर्षों के प्रयोग को साझा करते हुए बताया कि सेवाग्राम के स्कूल में कैसे इस पद्धति का प्रयोग किया गया। इसका उदाहरण यहां प्रस्तुत है- ''नई तालीम के ध्येय को सामने रखकर हर महीने के लिए कताई, बुनियादी दस्तकारी और बच्चों के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से शिक्षा के जो केन्द्र सहज मिलते हैं उन्हें इकट्ठा करके एक महीने का कच्चा पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है। महीने के आखिर में फिर इस पाठ्यक्रम की अनुभव की रोशनी में जांच की जाती है।'' इस उदाहरण से स्पष्ट है कि नई तालीम केवल किताबी ज्ञान को गतिविधि से प्रदान करने की विधि नहीं है। यह हाथ की कला देकर मनुष्य बनाने वाली विधि है। इसमें जीवन-रस निहित है जो मनुष्य को संपूर्णता की ओर ले जाता है। यह संपूर्णता मनुष्य के शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास को समेटे हुए है और अंततः चरित्र निर्माण में फलीभूत होती है।

नई तालीम में केवल कक्षा के भीतर शिक्षण के बजाय बाहर की दुनिया में क्या हो रहा है? इसे समझने का लक्ष्य रखा जाता है। चाहे वह भिंडी और लौकी के बीज को तैयार करने का अवलोकन हो, गांव की डेरी का अवलोकन हो, आसपास हो रही सामाजिक गतिविधियों का अवलोकन हो, ये इसकी स्वाभाविक अध्ययन पद्धति के अंग है। ऐसी गतिविधियों के अवलोकन और मनन, बच्चों में प्रयोग करने का उत्साह और जिज्ञासा पैदा करते हैं। खेती में प्रयोग, पढ़ाई में प्रयोग, कला में प्रयोग, रंग योजना में प्रयोग ज्ञान और कर्म में समवाय से पैदा होता है और इसे सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया बना देता है। अमूमन स्कूलों में जो बाल केन्द्रित तरीका अपनाते हैं उसमें बच्चों के सामने बौद्धिक चुनौतियां प्रस्तुत करते हैं और उसे पार करने की दक्षता का विकास करते हैं। ये बौद्धिक चुनौतियां कृत्रिम होती हैं। बच्चे धीरे-धीरे उसमें पैटर्न खोज लेते हैं। फिर समस्या का समाधान करने के बदले कृत्रिम समस्या के समाधान की युक्ति खोजने लगते हैं। इसमें नयापन कहां है? इसके उलट जितनी बार किसी दस्तकारी के साथ सीखने की कोशिश करेगें न केवल समस्या की प्रकृति नई होगी बल्कि हर बार आपको कुछ नया करने और खोजने के लिए आकर्षित करेगी। यह आकर्षण ज्ञान को विषयों के खंड में सीखने-सिखाने के व्यवहारवादी तरीके का विकल्प पैदा करता है। इसमें ज्ञान और संदर्भ की पारस्परिकता होती है जो सीखने को अधिक पुख़्ता बनाती है। आजकल सीखने के सिद्धान्तों में इस बात को उठाया जा रहा है कि विषय को सीखना, उस विषय की भाषा और शब्दावली को सीखना, उसके माध्यम से विचारों को व्यक्त करना है। विचारों में पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग विशेषज्ञता का प्रमाण माना जाता है। सवाल है कि इस शब्दावली को कैसे समझें? इसका एक रास्ता है वैज्ञानिक प्रक्रिया को जानकर, एक प्रक्रिया से दूसरे में अंतर करके, अधिक से अधिक मूर्त और प्रायोगिक ज्ञान को आनुभाविक स्तर पर समझकर। उदाहरण के लिए 'रिसाइक्लिंग' की अवधारणा को लेते हैं। हम प्रायः कक्षा में संप्रत्यात्मक स्तर पर इसकी चर्चा करते हैं। कुछ गतिविधियां भी कराते हैं। अक्सर रद्दी कागजों के पुनः प्रयोग की विधि का अभ्यास कराते हैं। इसी अर्थ में और इसी उदाहरण द्वारा 'रिसाइक्लिंग' को समझा और समझाया जाता है लेकिन नई तालीम के बच्चे इससे भिन्न उदाहरण संप्रत्यात्मक समझ के साथ देते हैं। उनके लिए यह कोई एक अवधारणा नहीं है जिसकी परिभाषा और उदाहरण को स्कूली ढंग से देना है बल्कि यह उनके स्कूल का रोजमर्रा का अभ्यास है जिसे वे अनेक गतिविधियों में अपनाते हैं। कताई, खेती, रसोई और सफाई आदि के काम में वे इसका प्रयोग करते हैं।

नई तालीम की पद्धति में शिल्पकार और श्रमिक के फर्क को समझने की जरूरत है। श्रमिक अपने आप में कोई दोयम दर्जे का शब्द नहीं है। फिर भी यह यांत्रिक कौशलों की पुनरावृत्ति के अर्थ में प्रयुक्त होता है। शिल्पकार उपलब्ध संसाधनों, जरूरतों और जिज्ञासा के अनुरूप किसी वस्तु में प्राण फूंकता है, उसे अर्थ देता है। नए की परिकल्पना करता है और गढ़ता है। वह सर्जनात्मक तनाव से गुजरता है। जब नई तालीम की आलोचना श्रमिक तैयार करने वाली पद्धति के रूप में की गई तो मार्जरी साइक्स इसकी पद्धति में निहित 'सर्जनात्मक तनाव' का उल्लेख करती हैं।[16] यह सर्जन की इच्छा काम और मनोरंजन, श्रम और विश्राम, व्यावहारिक खेती और सृजनात्मक कौशल के बीच सेतु का कार्य करती है। इसी अर्थ में दस्तकारी केवल कुछ कुशलताओं की पुनरावृत्ति से वस्तुओं का उत्पादन नहीं है बल्कि वह उद्योग, समाज और प्रकृति का समवाय है। यह केवल मनोरंजन या खेलकूद मात्र नहीं है। यह एक उद्देश्य के लिए की गई गतिविधि है। उद्योग या दस्तकारी ज्ञान केवल उत्पादक नहीं बनाता है बल्कि वह सामाजिक-राजनीतिक चेतना को भी जागृत करता है। यह जागरण केवल व्यक्ति और उसकी उपलब्धियों को सेलीब्रेट करना नहीं सिखाता है। इसका एक बड़ा पक्ष सामुदायिकता है। इसके लिए गांधी ने 'सेवा' का मंत्र दिया है। शरीर की सेवा, समाज की सेवा और प्रकृति की सेवा से व्यक्ति और समाज के बीच रिश्ता गहरा और पक्का होता है। इस सेवा की शर्त स्वावलंबन है। बिना स्वावलंबी हुए सेवा नहीं की जा सकती। स्वावलंबन के बिना सेवा में लालच और शोषण का अंश शामिल हो सकता है। 'सेवा' के इसी मूल्य और बोध को नई तालीम की पद्धति और विषयवस्तु में देखा जा सकता है। इस 'सेवा' का कर्ता स्वालंबन के लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। वह अपने मन, विचार और कर्म से अहिंसक, शांतिमूलक और धर्मनिरपेक्ष समाज की स्थापना में योगदान करता है। उसका खुद से रिश्ता, प्रकृति से तादात्म्य और समाज से संबंध सत्तासूचक संबंध से नहीं बंधे होते हैं। वह विकास के शाश्वत और टिकाऊ मॉडल को अपनाता है।

नई तालीम का भविष्य

विनोबा ने नई तालीम के लिए नित्य नई तालीम शब्द का प्रयोग किया है। इसका अभिप्राय है कि देश-काल के सापेक्ष नई तालीम की आत्मा (नई सामाजिक व्यवस्था की स्थापना का लक्ष्य) वही रहती है लेकिन इसका कलेवर बदलता रहता है। समकालीन परिस्थितियों में यह एक ऐसा मजबूत औजार है जो 'नए समाज' के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। इस समाज में प्रतियोगिता के बदले सहयोग, शोषण के स्थान पर न्याय, सांप्रदायिकता की जगह धर्मनिरपेक्षता के रास्ते को अपनाया जाएगा। यह ऐसे नागरिकों के विकास की संभावना लिए हुए है जो स्वतंत्रता बोध के साथ दायित्व बोध को भी धारण करते हैं, जिनके लिए नैतिक प्रगति और मजबूती के बिना भौतिक प्रगति मूल्यहीन है। नई तालीम का पहला पाठ्यक्रम जो जाकिर हुसैन कमेटी द्वारा प्रस्तुत किया गया था वह भी इसी अर्थ का प्रतिपादन करता है- *''आजकल हर समझदार आदमी को अपने समाज का अंग होना चाहिए ताकि जिस संगठित सभ्य समाज में वह रहता है, उसके ऋण को किसी न किसी तरह का मुफीद काम करके अदा कर सके।''*[17] व्यक्ति और समाज के इस संबंध को साकार करने के लिए स्वावलंबन के साथ श्रम की प्रतिष्ठा का बोध विकसित करना आवश्यक है। इसके लिए सीखने-सिखाने व शिक्षा की अन्तर्वस्तु को प्राकृतिक वातावरण और सामाजिक-आर्थिक परिवेश में स्थापित करना आवश्यक है जो पाठ्यचर्या की स्थानीयता, ज्ञान और कर्म में समवाय, व्यक्ति और समाज में सहकार, प्रकृति से तादात्म्यता को बढ़ावा देती है। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि अन्य ज्ञान या कौशल विद्यार्थियों को नहीं दिए जाने चाहिए। हां यह जरूर सोचने की जरूरत है कि कैसे राज्याश्रित या पूंजी आश्रित नागरिकों के बदले श्रमाश्रित और स्वावलंबी नागरिकों को तैयार किया जाए। इसका रास्ता केवल नौकरी की निर्भरता से मुक्ति नहीं है। यह एक बड़ा और गहरा सवाल है जिसके उत्तर की खोज भविष्य की नई तालीम को करनी है। आज भी व्यक्ति, समाज और प्रकृति का शोषण थोड़े से लोगों द्वारा किया जा रहा है जिसमें गरीबी, असमानता और प्रकृति का असंपोषणीय दोहन बढ़ता जा रहा है। शिक्षा के माध्यम से ऐसा प्रशिक्षण दिया जा रहा है कि हर व्यक्ति इसी विध्वंसक व्यवस्था का अंग बनता जा रहा है। ऐसी ही परिस्थिति में नारायण देसाई शिक्षा को मौत की ताकतों और जिंदगी की ताकतों के बीच फंसा हुआ कहते हैं।[18] मौत की ताकतें विभाजक होती हैं। यह समाज को ऐसे हिस्सों में बांटकर छोड़ती हैं जहां हर वर्ग, संप्रदाय, जाति एक दूसरे के खिलाफ होते हैं। ये ताकतें उपभोक्तावादी संस्कृति के वेश में भविष्य के विकास के लिए

चुनौती खड़ी कर रही हैं। श्रम को पूंजी से विस्थापित कर रही हैं। इन दशाओं में नई तालीम के सम्मुख चुनौती है कि कैसे वह जिंदगी की ताकतों के साथ खड़ी हो? कैसे शोषणमुक्त, अहिंसक, शांतिमय समाज के निर्माण का आधार बने? कैसे रचनात्मक कार्यों के आधार पर जनशक्ति खड़ी करके शोषण और अन्याय का मुकाबला किया जाए? कैसे शाश्वत व टिकाऊ विकास का रास्ता खोजा जाए? यह खोज शिक्षा व्यवस्था का संचालन या सामग्री आदि बदलकर संभव नहीं है बल्कि आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है। नई तालीम की शिक्षण पद्धति को कार्यानुभव या गतिविधि के रूप में अपनाने से पहले इसकी मूल्य मीमांसा और जीवनदर्शन को समझना और समझाना है। अन्यथा केवल अभ्यास या रोजमर्रा का चक्र बदल कर इस पद्धति का प्रयोग करने से इसका स्वरूप विद्रूप ही होगा। ◆

लेखक परिचय : सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।

संपर्क : 7057392903; rishabhrkm@gmail.com

संदर्भ

1. कनकमल गांधी (2005); *गांधी प्रणीत शिक्षा : क्यों व कैसे।* वर्धा : नई तालीम समिति के पृष्ठ 48 में उल्लिखित
2. शिवदत्त (2012); *नई तालीम : एक विहंगमावलोकन।* वर्धा : नई तालीम समिति के पृष्ठ 16 में उल्लिखित
3. कनकमल गांधी (2005); *गांधी प्रणीत शिक्षाः क्यों व कैसे।* वर्धाः नई तालीम समिति के पृष्ठ 6 से उद्धृत
4. महात्मा गांधी (1937); *नई तालीम की मूल कल्पना।* वर्धा शिक्षा सम्मेलन में गांधी जी द्वारा दिए वक्तव्य से उद्धृत
5. कृष्ण कुमार (1993); मोहनदास करमचंद गांधी (1869-1948)। प्रोस्पेक्ट्स - द क्वाटरली रिव्यू ऑफ एजुकेशन। वॉल्यूम 23 अंक 3, पृष्ठ-5017-17
6. कृष्ण कुमार मोहनदास करमचंद गांधी (1869-1948)। प्रोस्पेक्ट्स - द क्वाटरली रिव्यू ऑफ एजुकेशन। वॉल्यूम 23 अंक 3, पृष्ठ- 5017-17
7. जे. बी. कृपलानी (1957); *द लेटेस्ट फेड बेसिक एजुकेशन।* वर्धाः हिंदुस्तानी तालीम संघ
8. महात्मा गांधी (1937); *नई तालीम की मूल कल्पना।* वर्धा शिक्षा सम्मेलन में गांधी जी द्वारा दिए वक्तव्य से उद्धृत
9. आचार्य विनोबा भावे (2005); *गुण विकास की शिक्षा।* कनकमल गांधी द्वारा संपादित गांधी प्रणीत शिक्षाः क्यों व कैसे में संकलित
10. महात्मा गांधी (1937); *नई तालीम की मूल कल्पना।* वर्धा शिक्षा सम्मेलन में गांधी जी द्वारा दिए वक्तव्य से उद्धृत
11. आशा देवी आर्यनयकम् और ई. डब्ल्यू आर्यनायकम् (2005)। नई तालीम की व्याख्या। कनकमल गांधी द्वारा संपादित गांधी प्रणीत शिक्षा : क्यों व कैसे में संकलित
12. आशा देवी आर्यनयकम् और ई. डब्ल्यू आर्यनायकम् (2005); नई तालीम की व्याख्या। कनकमल गांधी द्वारा संपादित गांधी प्रणीत शिक्षा : क्यों व कैसे में संकलित
13. शांता नारूलकर और द्वाराका सिंह द्वारा बुनियादी तालीम के प्रयोग और विवरण से संबंधित दस्तावेज से उद्धृत।
14. आचार्य बिनोवा भावे (2005); नई तालीम का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दर्शन। कनकमल गांधी द्वारा संपादित गांधी प्रणीत शिक्षा : क्यों व कैसे में संकलित
15. बुनियादी तालीम के पहले छह वर्षों के प्रयोग पर शांता नारूलकर द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में उल्लिखित
16. मार्जरी साइक्स (2014); नई तालीम की कहानी। वर्धा : गांधी सेवा संघ
17. कामेश्वर प्रसाद बहुगुणा संपादित नई बुनियाद की तालीम : इतिवृत्त में संकलित डॉ जाकिर हुसैन के वक्तव्य से पृष्ठ 35 से उद्धृत
18. राष्ट्रीय नई तालीम सम्मेलन, 2004 के कार्य-विवरण में उल्लिखित